प्रसार-विधियों के संयोजन के प्रभावक तत्त्व
(Factors affecting the combination of methods)

1. कितनी विधियाँ उपलब्ध हैं (The range of methods available to the extension worker.) ।

2. प्रोग्राम में इन विधियों से कितने योगदान की आशा रखी जा सकती है (The contribution expected from the method in the programme.) ।

3. सीधे, सामूहिक और विराट सम्पर्क के अन्तर्गत आने वाली विधियों का कौन-सा संयोजित समूह, किसी विशेष कार्य की योजना के लिए सर्वश्रेष्ठ है (Which combination of individual, group and mass media will be best for a specific plan of work.)

4. कितने समय तक उसे एक क्षेत्र में चलाना है (The length of time the programme will be undertaken in the area.) ।

5. किस प्रकार का कार्यक्रम हाथ में लिया गया है अर्थात उससे किस प्रकार की सूचना या कौशल को दिया जाना है (Type of programme to be undertaken i.e. the type of information or skill to be imparted.) ।

6. किस प्रकार के व्यक्तित्व का और कौशलयुक्त प्रसार कार्यकर्त्ता उपलब्ध है (The personality and skill of available extension worker.) ।

7. किस प्रकार के लोगों तक सूचना को पहुँचाना है अर्थात् यह जान लेना भी जरूरी है कि किस आयु के स्त्री अथवा पुरुष, कैसी शैक्षिक योग्यता, विचारों एवं मनोवृत्तियों के लोगों तक पहुँचना है तथा अन्य मानवीय विशेषताओं को समझना भी जरूरी है (The type of people to be reached, their sex, size, education, motive and other complex human characteristics need to be understood properly.) ।

8. स्थानीय सामान्य परिस्थितियाँ, जैसे मौसमी कार्य, स्थानीय हालतें, विचार-विमर्श के लिए मिलने का स्थान, स्थानीय संगठनों की व्यवस्था तथा नेतृत्व आदि की कैसी हालत है (General local conditions, such as seasonal work, weather conditions, available meeting places, local organisations, and leadership.) ।

9. धन-सम्बन्धी तथा अन्य संसाधन (जैसे, सामग्री, यातायात के जरिए, परिवहन तथा अन्य सुविधाएँ जो प्रसार-विधि के प्रयोग के लिए जरूरी हैं) क्या हैं ? (Financial and

Scanned with CamScanner

other resources, such as equipments, transport, and other facilities in using one of the method.) ।

10. इन सब बातों की जानकारी पर आधारित, उचित विधि, उचित अनुपात में और उचित समय पर प्रयोग की जानी चाहिए (Based on foregoing considerations, right methods, in the right proportions and at right time should be used.) ।

इन विधियों की पूरी समझ नहीं होने से, प्रसार कार्यकर्त्ता परिस्थिति, स्थान और समय के अनुरूप सही विधि का प्रयोग नहीं कर पाता है । इसलिए उसका कार्यक्रम असफल हो सकता है । इसीलिए धामा ने बताया है, "A proper understanding of extension methods is essential in carrying on extension programme successfully. A lack of this understanding resulting in casual employment of methods, leads to the failure of all the efforts."

यदि इन्हें भली प्रकार नहीं समझा जाए और बेढंगे ढंग से, या मनमाने तरीके से प्रयोग किया जाए तो सारा प्रयास, व्यर्थ सिद्ध हो जाता है । लोग ऐसे कार्यक्रमों से भड़क जाते हैं और उनकी तरफ से उदासीन रवैया अपना लेते हैं । यदि नई बातें, नई पद्धतियाँ ठीक विधि द्वारा प्रस्तुत नहीं की जाती हैं तो फिर बार-बार के प्रयास के बावजूद लोग उन्हें स्वीकार नहीं करते हैं, क्योंकि वे उनमें रुचि खो देते हैं और उनसे किसी प्रकार भी लाभान्वित नहीं होते हैं । लोगों की अनमनी प्रतिक्रिया (indifferent response) का धक्का, प्रसार कार्यकर्त्ता पर भी लगता है । उसमें निराशा बढ़ती है और उत्साह कम हो जाता है । साथ ही देश की और कार्यकर्त्ता की, समय, श्रम और धन की दृष्टि से भीषण हानि होती है जिससे भविष्य में उस क्षेत्र में कल्याणकारी विकास को चलाना और भी कठिन हो जाता है । जैसा कि धामा ने लिखा है, "An ineffective extension programme would always mean not only enormous wastage of resources but also serious repercussions which would render further welfare work more difficult."

प्रसार-विधियों के द्वारा, प्रसार कार्यकर्त्ता, अपने ग्रहणकर्त्ताओं तक, अपने विचार पहुँचाता है । इनसे ऐसा असर होता है कि सीखने वाला, देखकर, सुनकर और करके सीखता है । ये उद्दीपक (Stimulus) का काम करती हैं जिससे सीखने वालों पर, सिखाने वाले का वांछित प्रभाव पड़ता है । ये विधियाँ सिखाने के काम को, प्रभावी शिक्षण परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं जिससे सीखने की प्रक्रिया के अन्तर्गत, हर कदम पर सीख (learning) को उत्तरोत्तर आगे बढ़ाना संभव होता है । प्रसार कार्यकर्त्ता की सफलता के लिए, यह बात ठीक-ठीक से समझना जरूरी है कि किन विधियों से, लोगों पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है और किनसे, कितना वांछित एवं सफल परिणाम निकल रहा है । उसे ऐसी विधियों की बराबर खोज करते रहना चाहिए । कभी-कभी इस प्रयास में कई विधियों के श्रेष्ठ सम्मिश्रण से, एक ऐसी, सर्वथा नवीन विधि का पता लगता है जो विशेष क्षेत्र के लोगों में परिवर्त्तन लाने में, बहुत अधिक सफल सिद्ध हुई है । इन सब बातों से पता चलता है कि विविध विधियों की जानकारी, उनका योगदान, उनकी क्षमता, उनका श्रेष्ठ संयोजन, उनका विशेष कार्य के लिए प्रयोग तथा उन्हें प्रयोग करने का उचित ढंग आदि बातों की जानकारी प्रसार कार्यकर्त्ता के लिए बहुत अधिक जरूरी है । इसके अलावा जो प्रसार-विधियाँ लोगों को कुछ बताने और सिखाने के लिए प्रयोग की जाती हैं वे अपने तौर पर तो असर करती ही हैं साथ ही उनका एक अप्रत्यक्ष प्रभाव (indirect influence) भी होता है अर्थात बहुत-से लोग, जिन तक प्रसार कार्य नहीं पहुँच पाते हैं वे भी प्रभावित लोगों को देखकर या उनके बारे में सुनकर प्रभावित होते हैं । प्रायः अच्छी सफलता

Scanned with CamScanner

प्राप्त करने वाले ग्रहणकर्त्ता के बारे में चारों ओर खबर फैल जाती है और उसके प्रति अन्य लोगों की उत्सुकता बढ़ती है । फलस्वरूप वे भी नई पद्धति को अपनाने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं । कार्यकर्त्ता को इसके बारे में पता नहीं चल पाता है परन्तु उसके जनलाभकारी शिक्षण का प्रभाव, अप्रत्यक्ष प्रभाव के कारण, दूर-दूर तक फैलता जाता है । इस प्रकार से प्रसार-विधियों के अन्तर्गत गणना नहीं होते हुए भी अप्रत्यक्ष प्रभाव के महत्त्व को, किसी अन्य विधि से कम नहीं माना जा सकता है क्योंकि इसका प्रभाव वहाँ तक पहुँच जाता है जहाँ तक प्रसार कार्यकर्त्ता भी नहीं पहुँचा रहता है और अपनी इस्तेमाल की गई विधि को भी नहीं पहुँचा पाता है । यह प्रभाव बड़ी गहन प्रकृति का भी पड़ता है केवल देख-सुन कर स्वयं की इच्छा से प्रेरित होकर, किए जाने के कारण इसकी गति को प्रबल संबल मिल जाता है । यह अप्रत्यक्ष प्रभाव प्रत्येक शिक्षण-विधि के साथ जुड़ा रहता है और एक स्थान पर उसके प्रयोग के उपरान्त उसका प्रभाव दूरदराज के स्थानों तक स्वतः फैलता जाता है ।

शिक्षण-विधियों के प्रयोग की दृष्टि से प्रसार शिक्षा, औपचारिक शिक्षा से भिन्न होती है । इसका कारण यह है कि जहाँ औपचारिक शिक्षा को प्रदान करने की विधियाँ निश्चित और निर्धारित होती हैं वहीं प्रसार शिक्षा में शिक्षण विधियों का प्रयोग विविध पारिस्थितिक कारणों से परिवर्तित करना पड़ जाता है । जैसी जरूरत आन पड़े वैसी विधि चुननी पड़ती है । रेड्डी ने लिखा है , "The extension methods selected, should be adjusted to the social, economic, physical and intellectual levels of the people and requirements of the situations that confront the extension worker." प्रसार-विधियों का प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है जहाँ कि अधिकांश जनता निरक्षर होती है और जो सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से कई पीढ़ियों से पिछड़ी हुई रहती है । वहाँ सभी आयु के लोगों को बताने और सिखाने का काम करना पड़ता है । वृद्ध, प्रौढ़, युवा, स्त्री, पुरुष, सभी प्रसार शिक्षा के अन्तर्गत, शिक्षार्थी की श्रेणी में आ जाते हैं । उन सभी तरह के और सभी आयु के लोगों तक प्रसार शिक्षण-विधियों द्वारा ज्ञान पहुँचाने का काम करना पड़ता है ।

प्रसार शिक्षा में दिया जाने वाला ज्ञान भी, जीवन से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों का दिया जाता है । वह किसान के लिए उन्नत कृषि का, गृहिणी के लिए उन्नत गृह प्रबन्ध का, बेरोजगार के लिए, उन्नत उद्योग-धन्धों को लगाने का, कम आमदनी वाले के लिए, पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य-पालन, आदि का, व्यापारी के लिए विपणन का तथा कृषि यंत्रों से सम्बन्धित लोगों के लिए एग्रोइन्जीनियरिंग का हो सकता है ।

प्रसार-विधियाँ कई होती हैं, कुछ मनुष्यों का ध्यान आकर्षित करती हैं, कुछ मस्तिष्क को विकसित करती हैं तथा कुछ जिज्ञासा बढ़ाती है । कुछ विधियाँ ग्रामीणों के समक्ष, उनकी रुचि के क्षेत्र के बारे में, नई बात, नई वस्तु, नई पद्धति को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग की जाती हैं । किन्हीं विधियों से यह जानकारी मिलती है कि नई विधि, गाँव की या व्यक्ति की परिस्थिति में कहाँ तक ठीक है ? कुछ विधियाँ, गाँव वालों को नए ढंग से विचार और व्यवहार करने का तरीका सिखाती हैं ।

इन सब बातों को देखते हुए, निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि प्रसार कार्यकर्त्ता के लिए, विधियों के प्रकार, उनकी सक्षमता, उनके चयन और उनके प्रयोग के बारे में पूरी-पूरी जानकारी होना अत्यधिक जरूरी बात है । भारत में ग्रामीण क्षेत्रों के विकास का प्रयास, काफी पहले से शुरू हो चुका है । वर्त्तमान स्थिति यह है कि ग्रामीण और ग्रामीण क्षेत्र , विकास की विभिन्न अवस्थाओं में हैं । यह नहीं कहा जा सकता है कि अमुक स्थान, पूर्ण रूप से

Scanned with CamScanner

अविकसित है या फलाँ स्थान का विकास पूर्णता को प्राप्त कर चुका है । जैसा कि रेड्डी ने लिखा है ,"People vary greatly in their knowledge, attitudes , skills, their position in the adoption categories, their educational training, age, income level, social status, religious belief etc. some are progressing and some are slow in change, some are "eye minded" while others are"ear minded" . जो कम शिक्षित्त हैं वे व्यक्तिगत बातचीत तथा परिणाम प्रदर्शन आदि जैसी विधियों से प्रभावित होते हैं और जो पढ़े-लिखे हैं, वे विचार-विमर्श तथा पढ़ने आदि से ही प्रभावित हो जाते हैं । अतः प्रसार-विधियों के चुनाव और प्रयोग को स्थान-विशेष की विकास की अवस्था और स्तर के अनुरूप रखने का ज्ञान भी, प्रसार कार्यकर्त्ता को होना जरूरी है । इसीलिए प्रसार-विधियों में आवश्यकतानुसार हल्का-फुल्का परिवर्त्तन (Adjustment) करने की अनुशंसा भी विशेषज्ञों ने की है । प्रसार-विधियों का प्रयोग, लोगों को कुछ बताने-सिखाने के लिए किया जाता है । इसके लिए कि लोग बताए ढंग से काम करें, उनमें रुचि जागृत करना और उन्हें यह सिखाया जाना जरूरी है कि वे किस प्रकार सफलतापूर्वक अपने में, अपने काम में और अपने काम करने के ढंग में परिवर्त्तन लाएँ । इस काम के लिए उच्च श्रेणी के शिक्षण की जरूरत होती है जो केवल प्रसार शिक्षण-विधियों के विवेकपूर्ण चुनाव से ही संभव है । प्रसार कार्यकर्त्ता को प्रोग्राम परिस्थिति, विकास की प्रावस्था, लोगों के सामाजिक-आर्थिक एक शैक्षिक स्तर, समय और उपलब्ध संसाधन के अनुरूप, प्रसार शिक्षण-विधि का चुनाव करने में, सक्षम होना अनिवार्य है । इन कामों के लिए प्रसार कार्यकर्त्ता को प्रसार-विधियों के प्रमुख कार्यों की जानकारी होना जरूरी है ।

Scanned with CamScanner